चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	13.3.26	5	1-5

जल संसाधनों के संरक्षण और फसल विविधीकरण पर जोर

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में 'उत्तर-पश्चिम भारत में लाभकारी एवं जल-सुरक्षित कृषि परिदृश्यों की ओर संक्रमण को समर्थन देने के सिद्धांत' विषय पर वीरवार को अंतरराष्ट्रीय गोलमेज बैठक आयोजित की गई। इस दौरान जल संसाधनों के संरक्षण और फसल विविधीकरण को बढ़ावा देने पर जोर दिया।

विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के वैज्ञानिकों, नीति विशेषज्ञों और कृषि क्षेत्र के प्रतिनिधियों के सुझावों के आधार पर पॉलिसी पेपर तैयार किया जाएगा। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि हरियाणा और पंजाब देश की खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं लेकिन लगातार घटता भूजल स्तर चिंता का विषय है। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने हरियाणा में सूक्ष्म सिंचाई तकनीक और वैकल्पिक फसल प्रणाली अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. बुट्टा सिंह ने पंजाब के अनुभव साझा किए।

सम्मेलन में अधिकारियों के साथ कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज। स्रोत : संस्थान

बैठक में पहले समूह में जल उपयोग और आपूर्ति, दूसरे में टिकाऊ फसल प्रणाली, तीसरे में कृषि की आर्थिक व्यवहार्यता पर चर्चा की गई। डॉ. आरके मलिक ने एग्रोक्लाइमैटिक जोन में क्रॉपिंग सिस्टम बदलाव पर जोर दिया। डॉ. सुधांशु

लाभकारी और जल-सुरक्षित-कृषि परिदृश्य के लिए एचएयू में अंतरराष्ट्रीय गोलमेज बैठक

ने मॉडर्न सिंचाई और हाइड्रोलॉजिकल साइंस पर विचार रखे। डॉ. एंटोन ने जल संरक्षण और डॉ. वीरेन्द्र ने डेटा-ड्रिवन लर्निंग के माध्यम से लाभकारी और जल-सुरक्षित फसल प्रणाली विकसित करने पर बल दिया।

अंतरराष्ट्रीय जल प्रबंधन संस्थान से फैज आलम, केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. आरके यादव, हरियाणा जल संसाधन प्राधीकरण से मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. सतबीर सिंह कादियान ने भाग लिया।

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	13.3.26	3	1-6

लगातार गिरता भूजल स्तर भविष्य के लिए गंभीर चिंता, कृषि प्रणाली में वैज्ञानिक बदलाव लाना जरूरी

जल संरक्षण आधारित कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना जरूरी: प्रो. काम्बोज

लाभकारी एवं जल-सुरक्षित-कृषि परिदृश्य के लिए हकृवि में बैठक आयोजित

हकृवि में आयोजित कार्यक्रम में कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज

हिसार, 12 मार्च (राठी): मौसम में बदलाव और लगातार गिरता भूजल स्तर भविष्य के लिए गंभीर चिंता का कारण बनता जा रहा है। कृषि वैज्ञानिकों ने जल संरक्षण आधारित कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने और कृषि प्रणाली में वैज्ञानिक बदलाव लाने का आह्वान किया गया है। इस कड़ी में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'उत्तर-पश्चिम भारत में लाभकारी एवं जल-सुरक्षित कृषि परिदृश्यों की ओर संक्रमण को समर्थन देने के सिद्धांत' विषय पर एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय गोलमेज बैठक का आयोजन किया गया।

बैठक में विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के वैज्ञानिकों, नीति विशेषज्ञों तथा कृषि क्षेत्र से जुड़े प्रतिनिधियों ने भाग लिया। क्षेत्र में जल संसाधनों के संरक्षण के साथ-साथ कृषि को और अधिक लाभकारी बनाने के उपायों पर विस्तृत विचार-विमर्श किया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो बलदेव राज काम्बोज बैठक में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित हुए जबकि अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान केन्द्र से डॉ. सुधांशु सिंह ने अध्यक्षता की। गौरतलब है कि अंतरराष्ट्रीय गोलमेज बैठक का आयोजन अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान केन्द्र व हकृवि द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस बैठक में विशेषज्ञों द्वारा दिए गए सुझावों के आधार पर उपरोक्त विषय पर पॉलिसी पेपर तैयार किया जाएगा।

कुलपति प्रो. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि उत्तर-पश्चिम भारत, विशेषकर हरियाणा और पंजाब देश की खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन लगातार गिरता भूजल स्तर भविष्य के लिए गंभीर चिंता का विषय है। उन्होंने कहा कि बदलती जलवायु परिस्थितियों और सीमित प्राकृतिक संसाधनों को देखते हुए कृषि प्रणाली में वैज्ञानिक बदलाव लाना समय की आवश्यकता है।

उन्होंने वैज्ञानिकों और नीति निर्माताओं से जल-संरक्षण आधारित कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने तथा किसानों को फसल विविधीकरण के लिए प्रेरित करने पर बल दिया। हकृवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि बैठक के दौरान विशेषज्ञों ने हरियाणा और पंजाब में जलस्तर एवं लाभकारी कृषि परिदृश्य से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार रखे। डॉ. बुट्टा सिंह ने पंजाब के अनुभवों के आधार पर कृषि प्रणाली में सुधार के संभावित उपायों पर प्रकाश डाला।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	13.3.26	5	4-8

जल संरक्षण आधारित कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना जरूरी : प्रो. बलदेव राज काम्बोज

हिसार, 12 मार्च (विरेन्द्र वर्मा) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'उत्तर-पश्चिम भारत में लाभकारी एवं जल-सुरक्षित कृषि परिदृश्यों की ओर संक्रमण को समर्थन देने के सिद्धांत' विषय पर एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय गोलमेज बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के वैज्ञानिकों, नीति विशेषज्ञों तथा कृषि क्षेत्र से जुड़े प्रतिनिधियों ने भाग लिया। क्षेत्र में जल संसाधनों के संरक्षण के साथ-साथ कृषि को और अधिक लाभकारी बनाने के उपायों पर विस्तृत विचार-विमर्श किया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो बलदेव राज काम्बोज बैठक में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित हुए जबकि अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान केन्द्र से डॉ. सुधांशु सिंह ने अध्यक्षता की। गौरतलब है कि अंतरराष्ट्रीय गोलमेज बैठक का आयोजन अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान केन्द्र व हकृवि द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस बैठक में विशेषज्ञों द्वारा दिए गए सुझावों के आधार पर उपरोक्त विषय पर पॉलिसी पेपर तैयार किया जाएगा। कुलपति प्रो. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि उत्तर-पश्चिम भारत विशेषकर हरियाणा और पंजाब देश की खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन लगातार गिरता भूजल स्तर भविष्य के लिए गंभीर चिंता का विषय है। उन्होंने कहा कि बदलती जलवायु परिस्थितियों और सीमित प्राकृतिक संसाधनों को देखते हुए कृषि प्रणाली में वैज्ञानिक बदलाव लाना समय की आवश्यकता है। उन्होंने वैज्ञानिकों और नीति निर्माताओं से जल-संरक्षण आधारित कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने तथा किसानों को फसल विविधीकरण के लिए प्रेरित करने पर बल दिया। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि बैठक के दौरान विशेषज्ञों ने हरियाणा और पंजाब में जलस्तर एवं लाभकारी कृषि परिदृश्य से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार रखे। हरियाणा के संदर्भ में उन्होंने भूजल संरक्षण, सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों के उपयोग और वैकल्पिक फसल प्रणाली अपनाने की आवश्यकता पर चर्चा की, जबकि डॉ. बुट्टा सिंह ने पंजाब के अनुभवों के आधार पर कृषि प्रणाली में सुधार के संभावित उपायों पर प्रकाश डाला। प्रतिभागियों को तीन समूहों में विभाजित कर विषयवार विचार-मंथन किया गया। पहले समूह में जल उपयोग लेखांकन तथा जल आपूर्ति आकलन के सिद्धांतों पर चर्चा की गई। दूसरे समूह में टिकाऊ एवं लाभकारी फसल प्रणाली के डिजाइन पर विचार-विमर्श हुआ, जबकि तीसरे समूह में कृषि की आर्थिक व्यवहार्यता सुनिश्चित करने के उपायों पर विशेषज्ञों ने अपने सुझाव दिए। डॉ. आरके मलिक ने हरियाणा के अलग-अलग एग्रोक्लाइमैटिक जोन में क्रॉपिंग सिस्टम में बदलाव के मौकों पर जोर दिया। डॉ. सुधांशु ने मॉडर्न सिंचाई इंफ्रास्ट्रक्चर में सुधार, हाइड्रोलॉजिकल साइंस और इंटीग्रेटेड पॉलिसी फोकस पर अपने विचार रखे। डॉ. एंटोन पानी की मामूली बचत से बाहर निकलने और बड़े स्तर पर फोकस करने की ज़रूरत है। डॉ. वीरेन्द्र लाभकारी एवं जल सुरक्षित फसल प्रणाली विकसित करने के लिए डेटा ड्रिवन लर्निंग पर जोर दिया। बैठक में अंतरराष्ट्रीय जल प्रबंधन संस्थान के फैज आलम, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ आरके यादव, हरियाणा जल संसाधन प्राधीकरण से मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. सतबीर सिंह कादियान सहित कृषि एवं किसान कल्याण विभाग हरियाणा तथा पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक, विभिन्न शोध संस्थानों के प्रतिनिधि तथा कृषि क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञ उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज बैठक को संबोधित करते हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	13.3.26	12	3-8

लाभकारी एवं जल-सुरक्षित-कृषि परिदृश्य के लिए हकृवि में हुई अंतरराष्ट्रीय गोलमेज बैठक

जल संरक्षण आधारित कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना जरूरी: प्रो. काम्बोज

जल संसाधनों के संरक्षण के साथ कृषि को और अधिक लाभकारी बनाने के उपायों पर किया मंथन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। बैठक को संबोधित करते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'उत्तर-पश्चिम भारत में लाभकारी एवं जल-सुरक्षित कृषि परिदृश्यों की ओर संक्रमण को समर्थन देने के सिद्धांत' विषय पर एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय गोलमेज बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के वैज्ञानिकों, नीति विशेषज्ञों तथा कृषि क्षेत्र से जुड़े प्रतिनिधियों ने भाग लिया। क्षेत्र में जल संसाधनों के संरक्षण के साथ-साथ कृषि को और अधिक लाभकारी बनाने के उपायों पर विस्तृत विचार-विमर्श किया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज बैठक में मुख्य अतिथि रहे जबकि अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान केन्द्र से डॉ. सुधांशु सिंह ने अध्यक्षता की। अंतरराष्ट्रीय गोलमेज बैठक का आयोजन अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान केन्द्र व हकृवि द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस बैठक में विशेषज्ञों द्वारा दिए गए सुझावों के आधार पर उपरोक्त विषय पर पॉलिसी पेपर तैयार किया जाएगा। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि उत्तर-पश्चिम भारत विशेषकर हरियाणा और पंजाब देश की खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन लगातार गिरता भूजल स्तर भविष्य के लिए गंभीर चिंता का विषय है।

विशेषज्ञों ने विभिन्न पहलुओं पर रखे विचार

डॉ. राजबीर गर्ग ने बैठक में दौरान विशेषज्ञों ने हरियाणा और पंजाब में जलस्तर एवं लाभकारी कृषि परिदृश्य से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार रखे। हरियाणा के संदर्भ में उन्होंने भूजल संरक्षण, सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों के उपयोग और वैकल्पिक फसल प्रणाली अपनाने की आवश्यकता पर चर्चा की, जबकि डॉ. बुट्टा सिंह ने पंजाब के अनुभवों के आधार पर कृषि प्रणाली में सुधार के संभावित उपायों पर प्रकाश डाला।

यह रहे उपस्थित

बैठक में अंतरराष्ट्रीय जल प्रबंधन संस्थान से फैज आलम, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. आरके यादव, हरियाणा जल संसाधन प्राधीकरण से मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. सतबीर सिंह कादियान सहित कृषि एवं किसान कल्याण विभाग हरियाणा तथा पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

क्रॉपिंग सिस्टम में बदलाव के मौकों पर जोर

डॉ. आरके मलिक ने हरियाणा के अलग-अलग एग्रोक्लाइमैटिक जोन में क्रॉपिंग सिस्टम में बदलाव के मौकों पर जोर दिया। डॉ. सुधांशु ने मॉडर्न सिंचाई इंफ्रास्ट्रक्चर में सुधार, हाइड्रोलॉजिकल साइंस और इंटीग्रेटेड पॉलिसी फोकस पर अपने विचार रखे। डॉ. एंटोन ने पानी की मामूली बचत से बाहर निकलने और बड़े स्तर पर फोकस करने की जरूरत है। डॉ. वीरेन्द्र ने लाभकारी एवं जल सुरक्षित फसल प्रणाली विकसित करने के लिए डेटा-ड्रिवन लर्निंग पर जोर दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	12.03.2026	--	--

जल संरक्षण आधारित कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना जरूरी : प्रो. काम्बोज

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'उत्तर-पश्चिम भारत में लाभकारी एवं जल-सुरक्षित कृषि परिदृश्यों की ओर संक्रमण को समर्थन देने के सिद्धांत' विषय पर एक द्विवसीय अंतरराष्ट्रीय गोलमेज बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के वैज्ञानिकों, नीति विशेषज्ञों तथा कृषि क्षेत्र से जुड़े प्रतिनिधियों ने भाग लिया। क्षेत्र में जल संसाधनों के संरक्षण के साथ-साथ कृषि को और अधिक लाभकारी बनाने के उपायों पर विचार-विमर्श किया।

कुलपति प्रो. काम्बोज ने कहा कि उत्तर-पश्चिम भारत विशेषकर हरियाणा और पंजाब देश की खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन लगातार गिरता भूजल स्तर भविष्य के लिए गंभीर चिंता का विषय है। उन्होंने कहा कि बदलती जलवायु परिस्थितियों और सीमित प्राकृतिक संसाधनों को देखते हुए कृषि प्रणाली में वैज्ञानिक बदलाव लाना समय की आवश्यकता है। उन्होंने वैज्ञानिकों और नीति निर्माताओं से जल-संरक्षण आधारित कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने तथा किसानों को फसल विविधीकरण के लिए प्रेरित करने पर बल दिया।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि बैठक के दौरान विशेषज्ञों ने हरियाणा और पंजाब में जलस्तर एवं लाभकारी कृषि परिदृश्य से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार रखे। हरियाणा के संदर्भ में उन्होंने भूजल संरक्षण, सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों के उपयोग और वैकल्पिक फसल प्रणाली अपनाने की आवश्यकता पर चर्चा की, जबकि डॉ. बूटा सिंह ने पंजाब के अनुभवों के आधार पर कृषि प्रणाली में सुधार के संभावित उपायों पर प्रकाश डाला।

प्रतिभागियों को तीन समूहों में विभाजित कर विषयवार विचार-मंथन किया गया। पहले समूह में जल उपयोग लेखांकन तथा जल आपूर्ति आकलन के सिद्धांतों पर चर्चा की गई। दूसरे समूह में टिकाऊ एवं लाभकारी फसल प्रणाली के डिजाइन पर विचार-विमर्श हुआ, जबकि तीसरे समूह में कृषि की आर्थिक व्यवहार्यता सुनिश्चित करने के उपायों पर विशेषज्ञों ने अपने सुझाव दिए। डॉ. आरके मलिक ने हरियाणा के अलग-अलग एग्रोक्लाइमैटिक जोन में क्रॉपिंग सिस्टम में बदलाव के मौकों पर जोर दिया। डॉ. सुधांशु ने मॉडर्न सिंचाई इंफ्रास्ट्रक्चर में सुधार, हाइड्रोलॉजिकल साइंस और इंटीग्रेटेड पॉलिसी फोकस पर अपने विचार रखे। डॉ. एंटोन ने पानी की मामूली बचत से बाहर निकलने और बड़े स्तर पर फोकस करने की जरूरत है। डॉ. वीरेन्द्र ने लाभकारी एवं जल सुरक्षित फसल प्रणाली विकसित करने के लिए डेटा-ड्रिवन लर्निंग पर जोर दिया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक, विभिन्न शोध संस्थानों के प्रतिनिधि तथा कृषि क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञ उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दक्ष दर्पण न्यूज	12.03.2026	--	--

जल संरक्षण आधारित कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना जरूरी: प्रो. बलदेव राज काम्बोज

» लाभकारी एवं जल-सुरक्षित-कृषि परिदृश्य के लिए हकृवि में अंतरराष्ट्रीय गोलमेज बैठक आयोजित

» गोलमेज बैठक अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान केन्द्र व हकृवि द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की गई

दक्ष दर्पण

हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'उत्तर-पश्चिम भारत में लाभकारी एवं जल-सुरक्षित कृषि परिदृश्यों की ओर संक्रमण को समर्थन देने के सिद्धांत' विषय पर एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय गोलमेज बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के वैज्ञानिकों, नीति विशेषज्ञों तथा कृषि क्षेत्र से जुड़े प्रतिनिधियों ने भाग लिया। क्षेत्र में जल संसाधनों के संरक्षण के साथ-साथ कृषि को और अधिक लाभकारी बनाने के उपायों पर विस्तृत विचार-विमर्श किया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो बलदेव राज काम्बोज बैठक में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित हुए जबकि अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान केन्द्र से डॉ. सुधांशु सिंह ने अध्यक्षता की। गौरतलब है कि अंतरराष्ट्रीय गोलमेज बैठक का आयोजन अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान केन्द्र व हकृवि द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस बैठक में विशेषज्ञों द्वारा दिए गए सुझावों के आधार पर उपरोक्त विषय पर पॉलिसी पेपर तैयार किया जाएगा। कुलपति प्रो. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि उत्तर-पश्चिम भारत विशेषकर हरियाणा और पंजाब देश की खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन लगातार गिरता भूजल स्तर भविष्य के लिए गंभीर चिंता का विषय है। उन्होंने कहा कि बदलती जलवायु परिस्थितियों और सीमित प्राकृतिक संसाधनों को देखते हुए कृषि प्रणाली में वैज्ञानिक बदलाव लाना समय की आवश्यकता है। उन्होंने वैज्ञानिकों और नीति निर्माताओं से जल-संरक्षण आधारित कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने तथा किसानों को फसल विविधीकरण के लिए प्रेरित करने पर बल दिया। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि बैठक के दौरान विशेषज्ञों ने हरियाणा और पंजाब में जलस्तर एवं लाभकारी कृषि परिदृश्य से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार रखे। हरियाणा के संदर्भ में उन्होंने भूजल संरक्षण, सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों के उपयोग और वैकल्पिक फसल प्रणाली अपनाने की आवश्यकता पर चर्चा की, जबकि डॉ. बुद्दा सिंह ने पंजाब के अनुभवों के आधार पर कृषि प्रणाली में सुधार के संभावित उपायों पर प्रकाश डाला।

वैज्ञानिकों ने भूजल संरक्षण, फसल विविधीकरण और टिकाऊ कृषि रणनीतियों पर किया मंथन-प्रतिभागियों को तीन समूहों में विभाजित कर विषयवार विचार-मंथन किया गया। पहले समूह में जल उपयोग लेखांकन तथा जल आपूर्ति आकलन के सिद्धांतों पर चर्चा की गई। दूसरे समूह में टिकाऊ एवं लाभकारी फसल प्रणाली के डिजाइन पर विचार-विमर्श हुआ, जबकि तीसरे समूह में कृषि की आर्थिक व्यवहार्यता सुनिश्चित करने के उपायों पर विशेषज्ञों ने अपने सुझाव दिए। डॉ. आरके मलिक ने हरियाणा के अलग-अलग एग्रोक्लाइमैटिक जोन में क्रॉपिंग सिस्टम में बदलाव के मौकों पर जोर दिया। डॉ. सुधांशु ने मॉडर्न सिंचाई इंफ्रास्ट्रक्चर में सुधार, हाइड्रोलॉजिकल साइंस और इंटीग्रेटेड पॉलिसी फोकस पर अपने विचार रखे। डॉ. एंटोन ने पानी की मामूली बचत से बाहर निकलने और बड़े स्तर पर फोकस करने की जरूरत है। डॉ. वीरेन्द्र ने लाभकारी एवं जल सुरक्षित फसल प्रणाली विकसित करने के लिए डेटा-ड्रिवन लर्निंग पर जोर दिया। बैठक में अंतरराष्ट्रीय जल प्रबंधन संस्थान से फैज आलम, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. आरके यादव, हरियाणा जल संसाधन प्राधीकरण से मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. सतबीर सिंह कादियान सहित कृषि एवं किसान कल्याण विभाग हरियाणा तथा पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक, विभिन्न शोध संस्थानों के प्रतिनिधि तथा कृषि क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञ उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	13.03.2026	--	--

जल संरक्षण आधारित कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना जरूरी : प्रो. बलदेव राज काम्बोज

-पाठकपक्ष न्यूज-

हिसार, 13 मार्च : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'उत्तर-पश्चिम भारत में लाभकारी एवं जल-सुरक्षित कृषि परिदृश्यों की ओर संक्रमण को समर्थन देने के सिद्धांत' विषय पर एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय गोलमेज बैठक आयोजित की गई। बैठक में राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के वैज्ञानिकों, नीति विशेषज्ञों और कृषि क्षेत्र से जुड़े प्रतिनिधियों ने भाग लेकर जल संरक्षण और लाभकारी कृषि से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। बैठक में विश्वविद्यालय के कुलपति बलदेव राज काम्बोज मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे, जबकि अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान केंद्र से डॉ. सुधांशु सिंह ने अध्यक्षता की। यह बैठक अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान केंद्र और हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की गई। बैठक में विशेषज्ञों द्वारा दिए गए सुझावों के आधार पर इस विषय पर एक पॉलिसी पेपर भी तैयार किया जाएगा। कुलपति प्रो. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि उत्तर-पश्चिम भारत, विशेषकर हरियाणा और पंजाब, देश की खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालांकि लगातार गिरता भूजल स्तर भविष्य के लिए गंभीर चिंता का विषय बनता जा रहा है। उन्होंने कहा कि बदलती जलवायु परिस्थितियों और सीमित प्राकृतिक संसाधनों को देखते हुए कृषि प्रणाली में वैज्ञानिक बदलाव लाना समय की आवश्यकता है। उन्होंने वैज्ञानिकों और नीति निर्माताओं से जल संरक्षण आधारित कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने और किसानों को फसल विविधीकरण के लिए प्रेरित करने पर जोर दिया।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि बैठक के दौरान विशेषज्ञों ने हरियाणा और पंजाब में जलस्तर, जल उपयोग और लाभकारी कृषि प्रणाली से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर अपने विचार साझा किए। हरियाणा के संदर्भ में भूजल संरक्षण, सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों के उपयोग,और वैकल्पिक फसल प्रणाली अपनाने की आवश्यकता पर विशेष चर्चा हुई, जबकि डॉ. बुट्टा सिंह ने पंजाब के अनुभवों के आधार पर कृषि सुधार के संभावित उपायों पर प्रकाश डाला।

बैठक के दौरान प्रतिभागियों को तीन समूहों में विभाजित कर विषयवार चर्चा कराई गई। पहले समूह में जल उपयोग लेखांकन और जल आपूर्ति के आकलन के सिद्धांतों पर विचार-विमर्श हुआ। दूसरे समूह में टिकाऊ और लाभकारी फसल प्रणाली के डिजाइन पर चर्चा की गई, जबकि तीसरे समूह में कृषि की आर्थिक व्यवहार्यता सुनिश्चित करने के उपायों पर विशेषज्ञों ने सुझाव दिए।

विशेषज्ञों ने भूजल संरक्षण, फसल विविधीकरण और टिकाऊ कृषि रणनीतियों को अपनाने पर जोर दिया। बैठक में अंतरराष्ट्रीय जल प्रबंधन संस्थान के फैज आलम, केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. आर.के. यादव, हरियाणा जल संसाधन प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. सतबीर सिंह कादियान, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग हरियाणा तथा पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के प्रतिनिधियों सहित विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक और अन्य विशेषज्ञ उपस्थित रहे।